

भांतवार वंय सुजनी कसीदाकी गरमी होइ तो बाहर पौढें शीतलता-
य होय तो सिंहासनको साज भांतवार चढे शब्दाके साज शीतकालके
दुजबं पीरे द्वापाके वस्त्र श्रीमस्तक पर इच्छ होइ सो का टिपरा
जोडी खुलनी.

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 3

चैत्र वरी में पहली मंडली गुला वकी होइ ता दिन गुलाबी वस्त्र ही
जोडी श्रीमस्तक पे गोल पाग हलकी शृंगार वा मुकुट धरकी धरे
शृंगार भारी होइ ह्योयाकी सामग्री मंडलीमें धरे (देवनागरी) श्री-
मदन मोहनजीके पाये उत्सव वस्त्र केशरी कुलह केशरी चंद्रिका सादा जोड आभरण
मणकरके फूठ मंडली शिदि। चैत्र सुद ६॥ यां तीनों होय।)

कुं श्रीजगन्नाथजी महाराजको उत्सव वस्त्र केशरी भांत वार कुलह
धरे जोड सादा जोडी लाल वा हीराकी शृंगार भारी त्वरकी दार
राजभोगमें हांडी मलडा.

॥ चैत्र सुद ८ ॥

कुं कसूमल वस्त्र पाग गोल वा छप्पेदार कूलंगी लूमकी धरे
वा सादा चंद्रिका जोडी सुनहराकी.

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

॥ चैत्र सुद ९ ॥

श्रीराम नौमीको उत्सव - नित्यके नेगमें और मठडी आरोगे आरतो
थारीकी होइ अभ्यंग होय वस्त्र केशरी जेरि थके. जन्माष्टमीकी
कुलह तापे केशरी वस्त्र चढे रामनौमी कुं श्रीमहाप्रभुजीके उत्सव
चंद्रिकाको जोड सादा जोडी लाल प्राचीन कमल पत्र होइ गादी हीरा
की शृंगार दूसरे उत्सवकव गोपी वल्लु भमें आरको पाटिया मीये
शाक उत्सवको संधाना. राजभोगमें छडी यल हार तीन कूज कच-
रियानकी थारी मिरच फल मीये शाक भुजेना करके तथा ऋतु
अनुसार वडीके शाक होइ हांडी नही दूधको कयोरा नित्यको
आरोगे. अन सुखजमें शाक भुजेना थारीमें आवे रायता कथेमें
गोपाल वल्लु भमें मेवाये उत्सवको संधाना खीर दूनी वजाकी छ-
छकी चपटिया - पल नामें बदाम मिश्रीकी डेही से. उत्थापनमें
मेव जालनी सक वरहकी. राजभोग सरके पडापे कंठको अष्टदल

श्रीगुरुदेवकी उल्लासक
श्रीगुरुदेवकी उल्लासक

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir

मांडके दंडवत करके श्रीबालकृष्ण जीकें पधरापके झालर घंय शंख-
 नाद होइ तिलक अक्षत तुलसी चरणारविन्दमें पंचामृतमें शंखमें
 समर्थे प्राणायाम करके संकल्प ॐ विष्णु विष्णु ३ रित्यादि उतरायणे
 वसंत ऋतु तो शुभ तिथी शुभ नक्षत्रे शुभ योगे शुभ करणे एवं गुण-
 विशेषण विशिष्टयां शुभ तिथीं मन मयादि पुरुषोत्तमस्य प्रादुर्भावो
 त्स्वं कर्तुं तदङ्गत्वेन पंचामृतस्नानमहं कारयिष्ये. पंचामृतस्नान
 वामन द्वादशी वत् रामनौमीकं श्रीविक्रमजीकं तिलक होइ ता पीछे
 श्रीबालकृष्णजीकं तिलक होय टेरा खेचें भोग आवै रही भात स-
 न्धि भई होय तो घोट्यो सुनुवा आरोगे दही भातके डकरामें ति-
 थ्यके संधानाकी कलेरी रामनौमीसुं दही भातमें आदा बंद जन्मा-
 ष्टमी ताई बुंदी शंकर पाराके ऐकरा उत्सवको संधाना सीतल भोग
 मीये शाक कैरीको विलसाख दूधकी हांडी कदली फलादिक
 संधो लोन मिरच वुरा चालनी सुक्तर हकी फलारको सब आरोगे
 तुलसी शंखोदक धूप दीप होइ झारी श्रीजमुनाजलकी समय होइ
 भोग सरे आचमन मुखवस्त्र वीड २ धरे सिद्धकी मंडली गाय्या-
 पे सुजनी सिद्धकी बाहर पोटें सांडकं पिछवाइ रामचरित्रकी
 तक्रिया गाईपै उष्ण कालके उत्सव नमें खोली श्वेत रहे गादीवस्त्र
 विछे वेत्र चौपड जडाऊ गेंद चौगान सेनेके आरसी बडी देखे
 राजभोग आरती होइ आजसुं पांच मात्याको आघो जोड शुद्ध

॥ चैत्र सुद १० ॥

कं शृंगार येही छडियलदार पकौजीकी तथा डुवकीकी कठी
 आरोगे गोपालवल्लभमें बुंदीके लडुवा आरोगे पापड कचरिया
 तिलवडी देवरी मिरच फल आरोगे.

॥ चैत्र सुद ११ ॥

सुं मिरचफल बंद राजभोगमें गोपीवल्लभमें नित्य नहीं उत्सवके
 गिन आरोगे एकादशीसुं शायतमें दोइ पापड.

॥ वैश्र सुद १२ ॥

झादरीसुं कंदके शाक भुजेना बंद एका दशीकुं केवारी वरुण वा कसूमल वल्ल टोपी कुंजाकी वा झालरकी जोडी खुलती सब एकादशी कुं कंदके शाक भुजेना आरोगे श्रीमहाप्रभुजीके उत्सवकी वधाई बैठे

॥ वैश्र सुद १५ ॥

मेष संक्रांत बैठे ता दिन शृंगारको नियम नही संक्रांति सवे रकुं बैठे तो गोपाल वल्लभमें सुतुवाके लडुवा चोरयो सुतुवा आगेकी डवरीयानमें सांझकुं संक्रांति बैठे तो दूसरे दिन गोपाल वल्लभमें चोरयो सुतुवा आरोगे संक्रांतिको भोग जा समय संक्रांति बैठे ता समय आवे सुतुवाके लडुवा मीये शाक चालनी सब तरहकी तुलसी समर्पे धूप दीप होइ अनोसरमें संक्रांतिको भोग नही आवे श्रीमहाप्रभुजीके उत्सवकुं मेष संक्रांति बैठती होइ तो दूसरे दिन मंगल भोगमें सुतुवा धरने उत्सवकुं नही

॥ वैशाख वद १ ॥

वैशाख वद एकमसुं छट ताई एक दिन श्रीमहाप्रभुजीके उत्सवको शृंगार होय

॥ वैशाख वद ११ ॥

श्रीमहाप्रभुजीको उत्सव - वरुण केसरी मलमलके कुलह केवारी जोडी लाल कमलपत्र होइ शृंगार दुहरो दूसरे उत्सववत् चुसनी सोनेकी मोतीकी धरे अरोगवेको मंडान श्रीगिरिधरजीके उत्सववत् चार भाव नही दही भाव शिरवरण मिश्रीको पना अधकीमें आरोगे

अभ्यंग उवटना सहित श्रीगुरुजीकुं होइ श्रीमहाप्रभुजीकुं अभ्यंग उवटना सहित होइ सोधो समर्पे आभरण गुंजा पहरे राज भोगके समय न्यारो भोग आवे तिलकको क्रम श्रीगिरिधरजीके उत्सववत् श्रीगुसांईजीके उत्सवकुं श्रीमहाप्रभुजीके उत्सवकुं नोछावर होय पटका नही श्रीगिरिधरजीके उत्सवकुं पटका नोछावर

होइ चंदुवा श्वेत कसीदाके पाट बौकीकी खोली कसीदाकी श्वेत पिछु
 वाई सिंहासन केशरी सिंहासनको सब साज जन्माष्टमी वत् जडाऊ
 लंबी गादी लकियानपै श्वेत भांतवार करन मखमल दाके जेवु दीख
 तो राखे शय्या मंदिरमें हिजेरा खांकी सांकल चढे चुनके दिवलाकी
 आरती मोतीकी थारीकी मुडाके टकना कसीदाके

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 3
 www.vallabhacharya-agrahar.org

www.vallabhacharyakrupa.org

(Pushchimargiya Research Portal)

द्वादशीके शृंगार एकदशीको छडि यलहार डुककीकी कडी पाप
 उ कंदके साक भुजेना गोपालवल्लभमें बुंदीके लडुवा आरोगे साज
 कुं चोकमें चंदनके वंगलामें विराजे भोग संख्या शयन बंगलाहीमें
 होय.

॥ वैशाख सुद ३ ॥

अक्षय तृतीयाके दिन बडे बालभोग सनुवाको आरोगे आरती
 मोतीकी थारीकी रूपके दिवलाकी अभ्यंग होय वरन श्वेत केसरी
 की वैल कोरमें छ गोलकमल केशरके ४ कमल खूटपै २ बीचमें
 ऐसी ओदनी ओदने वागा अक्षय तृतीयासुं बंद आश्वन वही मावस
 ताई श्रीजन्माष्टमी तथा नौमी दसमीके वागा पहरे राधा अष्टमी
 तथा नौमीके वागा पहरे आश्वन सुद १ कुं वागा पहरे अक्षय
 तृतीयासुं ४ वातीकी आरती होय जन्माष्टमीसुं आरतीके २ खंड
 पूरे आश्वन सुद १सुं आरतीके ३ खंड पूरे वैशाख सुद १सुं
 आरतीके खंड २ अक्षय तृतीयासुं १ खंड पूरे केशरकी
 कोरकी ओदनी कागदके चित्रकी श्वेत कुलह तीन चंद्रिकाको जो
 उ कुलहपै आभरण मोतीके ताइत त्रिवल लड अलकावली गोदी
 पै फूल नहीं तीन परखडीकी कलंगी तुरी मकराकृत कुंडल मोती
 के श्रीकरमें वही धुगधुगी धरे हत सांकला मुहा श्रीहस्तमें
 फूल नहीं धुगधुगी धरे कटिपेच जोड़ी मोतीकी पोरना वडे गादी
 पै शृंगार मध्य ताई हतमाल मोतीके आरसी कडी देखे शय्यापै
 वंय चिकनो चढे श्वेत सुजनी मुडाके टकना श्वेत मुडाके वरन
 फलटने रंगीननिकासने श्वेत धरने रूपहरी किनारोके चुनहरी

Shri Tajji Maharaj Ki Pustak

Sansthan

Shri Jagad Gokulnathji Maharaj

Mota Mandir

किनारीके सारा भांतवार नये जोड उत्सवनके रहे. पेडा श्वेत पिछ-
 वाई डोारेयाकी श्वेत पंखा चंदुका पेडा पंखा चंदेके श्वेत करवा
 कुंजा करवडी अरगजाकी करनी उत्थापनमें चनाडी हार मिश्रीको फा
 गोपीवल्लभमें आरवा पाटिया मीये शोक उत्सवको संधाना करीको
 विलसारु गोपीवल्लभमें राजभोगमें नित्य शुरु गुलापको सीरा वंद
 चौधसु राजभोगमें छडीयलहार पकाडीको कडी पापडको नग पुरो
 कचारेया (विलडडो देवति) लेनी वूडा वडाको छछ नही मीये शाक उ-
 त्सवको संधाना गोपालवल्लभमें मनोहरके लडुवा खीर डेडी हांडी नहीं
 नित्यके दूधको क्येरा आरगे

पलनामें मिश्रीकी डेली मदान सेव

चौकीपर गुलावजलकी शीशी अरगजा करवा करवडी पंखा नये त्रि-
 चौडीपै अधिवासनकी त्यारी राजभोग सरे श्रीगुरुजी सिंहासन
 पै विराजे माला सब स्वरूपनकुं पहराके श्रीजमनाजलकी झारी
 श्री गुरुजीकी भरे तिवारीमें उत्तरमुख बैठके अधिवासन करे

प्राणायाम संकल्प करे विष्णु विष्णुके त्याग उत्तरयणो वसंत ऋतु
 वैशाखमासे शुक्लपक्षे अक्षय्य तृतीयायां शुभकारे शुभनक्षत्रे शुभ-
 योगे शुभकरणे एवं गुणविशेषण विशिष्टयां शुभ तिथौ भगवतः श्री-
 पुरुषोत्तमस्य चंदनोत्सवं कर्तुं तदङ्गत्वेन चंदनाधिवासनमहं करिष्ये
 कर्तुं अक्षत छेडके गडीकी क्येरी भोग धरे तुलसी शंखोदक धूप-
 दीप ४ वातीकी आरती पंखा चंदन निजमंदिरमें धरे एक करवडी सिंहा-
 सनपै करवा करवडी शय्यामंदिरमें धरे दर्शन खुले कीर्तन होष

दंडवत करके आरु चंवा शंखनाद अरगजाकी गोली २ धराके शहर-
 यमें दोइ श्रीहस्तमें २ चरणारविन्दमें तुलसीदल समर्प छोटे गुरु
 रजीकुं शालिग्रामजीकुं श्रीमहा प्रभुजीकुं अरगजाकी गोली समर्प हाथ
 धोवके पंखा करे टैरा खच भोग उत्सवको जाके दही भात संधाना

की क्येरी दोरयो सवुवा पना मिश्रीको पना खांडको बीजके लडुवा
 उत्सवको संधाना दूधकी हांडी मीये शाक करीको विलसारु क-

दही फलादिक लोन मिरच कुर चालनी सब तरहकी श्रीजमुनाजल की झारी पहले भरी होइ सो श्रीवकुरजीके वाम ओर धरे। तुलसी रांगोदक धूप दीप समय होय भोग सरे आचमन मुखवस्त्र वीड २ धरे पाट चोरी लगावे मोतीको केन चोपड कच वरनी झा-
 री सब सीसी खण्डके मेंद चोपार रूपके राज भोग आती होय माल बडी होय चरणारविन्दके चन्दनक गुलाबजलसं भिजोय देनो श्रीम-
 हा प्रभुजीको चन्दन वडी कर लेनो अनोसर होय खसके परवा टैरावटी अक्षय तृतीयासुं शुरु रथयात्रा ताई गरमी होय तो अषाढी ताई उत्थापनके समय श्रीवकुरजीके चरणारविन्दक गुलाबजलसं भि-
 जोवनो। उत्थापन भोगमें मिश्रीको पना चनाकी दार भीजी तामें अजमान पधरावे तीजकूं चोचकूं मूंगकी दार पंचमीकूं आये मूंगकी अकुरी ता-
 के ऊपर खोपराकी जलेकी या प्रकार ओसरासुं नित्य रथयात्रा ताई आरोगें स्नानयात्राकूं दार नहीं छेके मूंग आरोगें रथयात्रासुं छेके मूंग चनाकी दार मूंगकी दार एक ओसराकूं छेके आरोगें एक ओस-
 राकूं भीजे आरोगें जन्माष्टमी ताई करवा करवडी पनादार अरगजा-
 की वरनी जन्माष्टमी ताई अक्षयतृतीयासुं श्वेत करवडी कुंजा रथ-
 यात्रासुं लाल करवडी कुंजा जन्माष्टमी ताई गरमी पहले बहुत आइ जाय तो संवत्सरसुं बाहर पौदे रामनेमीसुं हिडोरा खाट चढे श्रीमहा प्रभुजीके उत्सवसुं उत्थापनमें पना आरोगें वैशाख दोइ होइ तो करवा करवडी शुरु होय अरगजाकी सुगंध चन्दन मलिया गिर के-
 सर गुलाबजल अन्तरके वडाके अगर अकर चोवा गुलाबको अन्तर करवरी वरास फुलेल आजसुं माला १० को आतो जोइ शुरु सो अषाढी पूनम ताई

॥ वैशाख सुद ४ ॥

चोचकूं शृंगार अक्षयतृतीयाके कुल्ह पर पान अकुरीकी विसरको तुरी हीराके

॥ वैशाख सुद ५ ॥

आजसुं छिरकाव शुरु राया गुलाबजलसुं छिडके वैशाख सुद १० कूं श्री गिरिधारी रायजीके लालजीको उत्सव करवा करवरी डोरियाकी

ओढनी वाहरकी खिडकीकी भाग हीराकी जोड़ी एक टेकजकी श्रीकंठ-
 में कंठी दुगदुगी निवळ हीराके कर्णफूल २ हस्तपूल २ हीराकी
 अलकावली सीसपूल सिरपेन हीराके कलंगी दूमकी गारीपै ७
 माला आंगार हीराके आंगोवके अंग शीरी दुलरायपीके अंगवव
 राजभोगमें सिरकान भाव आंगोमें जलको होइ फुहारा रास आ-
 जसु राजभोग आवती विरियां तलसी समे पीछे ओढनी बडी
 करनी सो बडी आरागे पीछे उदाय देनी (जलको होइ फुहारा
 शुद्ध सप्तमीसुं) और चौदससुं जलको परातमें खिलेना एषयात्राके
 पहले दिन ताई राजभोगमें आरती भुये पीछे आरसी देखे माला
 बडी होइ ओढनी बडी करे सप्तमीसुं अषाढी ताई हिबोल विरा-
 जें ता दिनसुं नहीं

॥ वैशाख सुद १४ ॥

श्री नृसिंहजीके उत्सव आखे दिनमें और मण्डौ आरती थारीकी
 खपेके दीपलाकी अभंग होइ करन केशरी मलमलके जोडी मोतीकी
 फुलह केशरी रूपहरी चिलकी पान तुर्ग वीका गोंयेके पूल हीराके
 आभरण मोतीके तीन चक्रिकाका जोड हास कुडल श्रीहस्तमें फूल
 हीराके श्रीकंठमें चौकी मोतीकी तापै वधनवा छेये पहरे गारी
 पै हार मोतीको एक हार हीराके हीराकी दुगदुगीकी माला उत्सव
 हार जुहीको कलीको चंपकलीको मोथीको नियम नहीं धरे क
 न धरे आरसी बडी देखे गोपीवल्लभमें आखे पाटिया मीगे
 शाक उत्सवको संधाना पलनामें उत्सव प्रमाण उत्थापनमें उत्सव
 प्रमाण राजभोगमें मीये शाक क्येरीनेमें आके घोखो सुनुवा
 आगेकी डकरियामें छडीयल दार पकोडीकी कदी पापड वडीके शाकर
 गोपाल वल्लभमें सुनुवाके लडुवा उत्सवको संधाना खीर उवे
 हांडी नही नित्यके वडके संधार आंगोमें अन्नसकडीके शाक
 होय द्वादशीके संध्या आरती पीछे अंगार रखो आपे

शयनभोग सरे चौक्रमें चौकीपै विराजे आचमन मुखवरून होय
 माला श्री गुरुजी पहरे एक झारी १ करवडी श्रीजमुनाजलकी

वैशाख सुदी १३ श्रीमहा प्रभुजीकी पादकाजीको पाट उत्सव
 वरुन केसरी मलमलके किनारीदार ओढनी झालर किनारीकी बूले
 केसरी चित्रकी आभरण हीराके नूपुर हीराके कटिपेच हीराके
 पोत्री बाजूबंद जोल टिबडा पावेया के गोपीपेसिरपेच के टिडा
 ने हीराके फूल मंडल मकराज हीराके पाज हीराके श्रीमहा फूल
 हीराके कलहकी त्रिवल अलवावली हीराकी फोंदना खेटे सिं-
 गार मध्यको गादीके ऊपर दोष त. ३ हार हीराके और आभ-
 रण मोतीके तीन चंद्रकाकी जोड वेणु. वेन मोतीके श्रीमहा प्रभु-
 जी आभरण गुंजा पहरे. श्रीमहा प्रभुजीकी पलंगडीकूं पोस वि-
 छे सरदेको सपेद. राज भोगमें त. गोपीवल्लभमें छडवाल दाल
 पकोडीकी कर्मे मीठे स्याक पापड वडी तिलवरी डेवरी त. व-
 डीको स्याक पाटीया आधो सेव से. १। बुरो सेर १॥—
 ची १— सुगंधी तो. ॥ इलाइकी. त. गोपालवल्लभमें
 रसकी बुरीके लडुवा वेसन से. ॥ ची से. ॥ बुरो से. १॥
 त. आंवाको रस यामें पडे सो कस्तूरीकी सुगंध वाल २
 त. छच्छ वजकी चामरिया १ ताकी दाल उर्दीकी पाव. १
 ची २— त. दूध घरमेसूं हांडी १ रतल ३ दूधकी ताको
 बुरो तो. २० सुगंधी तो. ॥ इ. त. मलराको दूध रतल ४॥
 बुरो पाव. १२— केसर तोला. १। सुगंध तो. ॥ इला. त. रु. १
 की सामग्री दूध घरकी त. ओर सव नितनेग प्रमाणे जो सामग्री
 बाल भोगमें न भई होइ तो त. राज भोगकी आरती मोतीकी थारीकी
 साज त. पंखा केसरी चोपड मोतीकी ताको पट अर्गजी तोर्ण
 वंदन नार देहरी त. सांझको वैष्णवनको मनोरथ होइ तो फूल
 मंडली होइ त. वैष्णवनको मनोरथ न होइ तो इ फूल मंडली
 आवश्यक होइ त. आरसी वडी

भरके धरे वरनी सीसी पीडा नित्यवत् दरसन खुले स्नानके पड़ा-
 पै कंकुको अष्टदल करके दंडकत करे झालर घंटा शंखनाद श्री
 नृसिंहजी शालिग्रामजीके पड़ाणे पधरावे तिलक अक्षत तुलसी
 श्रीशालिग्रामजीके ऊपर तथा पंचामृतमें समर्पे प्राणायाम करके
 सकल्प करे ॐ विष्णु विष्णु विष्णु रित्यादि उन्तमायणे वसन्त-
 ऋतौ वैशाख मासे बुधु पक्ष चतुर्थया तिथी शुभवार शुभन
 क्षत्रे शुभयोग शुभकरणे एक गुण विशेषण विशिष्टया शुभतिथी
 भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य नृसिंहावतार प्रादुर्भावेत्सर्वं कर्तुं तद-
 ङ्गत्वेन पञ्चामृतस्नानमहं कारयिष्ये पंचामृत श्रीवामनजीवत्
 श्रीशालिग्रामजीके गारीके पास जेवनी ओर पधराके श्रीशालि-
 ग्रामजीके तिलक अक्षत तुलसी श्रीगोकुलजीके करणारविंदपै
 श्रीशालिग्रामजीके समर्पे किवाड फेरें शीलल भोग पास धरके
 शृंगार वृद्धे करे श्रीकंठमें वधना रहे कुलह पर ताइल हीरा-
 को ना मोतीको करपडी उवाय लेंड झारी श्रीगोकुलजीकी फेर
 में भरे **Shri Tatiji Maharaj Ki Pustak** स रह्यो आवे
 दही भातको उकरा सधानेको कयेरी घोरयो सतुवा हांडी दूध
 की सीये शाक खडबूजाको पना चालनी सब तरतकी सेंघो
 लोण मिरच दूरा मगको उकरा फलारको सब शाक रायता भु-
 जेना सब आवे फलारको

भोगसरे आचमन मुखकरत्रपीडा २ श्री शालिग्रामजीके खंबों पध-
 रावे श्रीगोकुलजीकी माला बडी करके जोड पहरावे सब स्वस्ती
 माला पहरावे रायन आरती होइ जोड बडी होइ पीटे अनो-
 सरको साज नित्यवत् शय्यानके नीचे सांसकुं नित्य छिडकाव

॥ वैशाख सुद १५ ॥
Sansthan

Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir
 पुनमकु शृंगार चौरसका श्रीकंठमें हांस त्रिवलके टिमाने वधना
 छोटी मोतीकी लडके धरे नृसिंहजी पीछे छठे दिना पांचमे दिना
 अभ्यंग होइ दीतवार मंगलवार द्वादसी मावस टालरें होय पहले
 अभ्यंगकुं शिवरान भात ~~दही भात ओसककुं~~ दूसरे अभ्यंगकुं दही-

श्रीगोकुलजीके

भात आरोगे नृसिंहजी पाछे रथयात्रासुं पहले अभ्यंगकूं शिखर-
 भात दही भात ओसरसुं आरोगे पहले अभ्यंगकूं तथा देखे अभ्यं-
 गकूं शिखर भात आरोगे देखे अभ्यंग रथयात्रासुं पहले अभ्यंग
 नृसिंहजी पीछे रथयात्रा पहले कदीक टिकाने दोइ विरिया अड-
 कंग दोइ विरिया छूछ एक विरिया पक्काडकी एक विरिया बूंदी-
 की शयनमे थोना दार भरसा चार विरिया आरोगे

रायनमे एक विरिया गुलाबको सौरा रोकी एक विरिया केरीको
 विलसासु रोयी एक विरिया खडबूजाको मीचे साक रोयी एक वि-
 रिया आंवको विलसासु रोयी एक विरिया आंवरस रोयी ये सब
 नियमसुं आवे मनोरथसुं मंगल भोगमे लुचई आंवरस कोई दिना
 आंवको विलसासु लुचई कोई दिना केरीको विलसासु लुचई
 खडबूजाको विलसासु लुचई गुलाबको सौरा लुचई शिखरण-
 लुचई कोई दिना केसरी शिखरन लुचई

खडबूजा जवसुं आवें तवसुं गोपीबद्ध भमे राज भोगमे पणख-
 बूजाको आरोगे अधकी चले जवे छोटी डवरीया मंगल भोगमे गोपी-
 बद्ध भमे राज भोगमे सध्यामे शयनमे नित्य आरोगे एक दोइ
 विरियां सांझ सवेरे अनोसरमे थारीमे खडबूजा एक क्येरी बुरा-
 की एक मिश्रीकी ऐसे ही आंवरस राज भोगमे गोपीबद्ध भमे आरोगे
 ऐसे ही आंवको डवरीया बुरा नहीं कोई दिना मनोरथ फूलके
 पलनाको होय ता दिन तिवारीमे पलना झूले पलनाके पास भोग
 आवे दहीकी सेवके लडुवाको धार गोपालबद्ध भ वरावर में दही
 पूरी मीचे शाक वा विलसासु ४ तरहेके फीके पूडफडीया चनादार
 चालनी सब तरहकी कदली फलादिक लोन मिरच बुरा साखन मि-
 श्रीकी क्येरी खोवाकी गोली दधकी हंडी नित्यको भोग बीडा मा-
 ला सब स्वरूप पहरे दरीन खले जारी एक पास रहे
 पलना झूले पलना गावे थारीकी आरती रूपके दीवलाकी नौछवर
 होइ गई लोन उतार

राज भोगकी शारी भरे राज भोग धरे पलनाको भोग राज भोग
 आवें पलनाके दरीन बहुत विरियां ताई होय तो पलनाको भोग

भोग सरे वेग होय तो राज भोगमें आवे.

॥ ज्येष्ठ वद २ ॥

कुं चार सारूपको उत्सव अरगजी वरभ श्रीमस्तकपै पेंव चं-
 द्रिका कतरा सारा जोडी मोतीकी फोदना बडे हीरा मोतीके आभ-
 रण मिलमा श्रीनृसिंह जी वत् वचनखा नहीं धरे दुगदुगी धरे
 बहुत गरमी होय तो मध्यको शृंगार होय आरती थारीकी गो-
 पीवल्लभमें भातकी धार छडीपल दार पकोडीकी कवी मीये शाक
 पापड २ राजभोगमें ४ पापड गोपाल वल्लभमें मनोहरके लडुका
 हांडी मल्ला आधो पारिया मीये शाक वडाकी छाछके डकरा
 ज्येष्ठ वदीमें जल भरे ता दिन वरभ श्वेत बाहरको पेंव एककीजो-
 डी श्रीमस्तकपै खडला धरे गोपीवल्लभमें राज भोगमें खंडराको सब
 प्रकार होइ आश्विन सुद २ कुं होइ ता प्रकार गोपालवल्लभ नहीं
 लुचई नित्यकी अरोगे जल अने सरमें भरे जलमें कमल कमल
 के पतुवा खिलोना डार राखे उत्थापन के समयसां ग्वाल तांडी
 तिवारीमें सांके सिंहासनादि सांके शयनसिंहे कक्षे चोरीपे विरा-
 जे शयन भोगमें भरता धेवा दार आरोगे.

॥ ज्येष्ठ वद ३ ॥

कुं वट सावित्री पूजते होइ तो सुहारी राजभोगमें आरोगे श्वेत तथा
 पीरी

॥ ज्येष्ठ सुद १० ॥

के दिन द्वाहरा वरभ अरगजी बाहरकी खिडकीकी पाग लूमकी
 कलंगी जोडी हीराकी एक टिकडकी शृंगार श्री गिरि धारीजीके उत्सव
 वत् छडीपलदार पकोडीकी कवी

गोपालवल्लभकी धारमें अठारह अठारह नग धरे मगडी खाजली
 सुहाली २ तरहकी थारके पास खोनकी कवरी एक डवरीया सीराकी
 मिश्रीको पना.

राजभोग आवेवेमें सांगा मानीपै श्रीजसुनाजीको शृंगार होइ अरग
 जी सन्धी चोली लहंगा नहीं फोदनी मोतीकी २ हार ४ माला गुंजा पू-

लकी माला कमल पास चौखण पे पंखा श्रीजमुनाजलकी झारी करवडी आरसी अरगजाकी वरनी गुलाबजलकी सीसी सिंदूरकी वंगी वीको को पु-
जीका.

पडगी पे दही भात घारणे सुतुवा अनसरखडीने जोरी पे लेंते थार ड-
रीया आने घेंते ही साम ग्रीके थार डरीया श्रीजमुनाजीक भोग आवें अं-
रस मिश्रीको पना आंकी वरपी सीरा खडवुजा कदली फलारिख लेण
मिरच वण

(Pushchimargiya Research Portal)

पहनामें सु श्री गुरुजी भोगमंदिरमें पघार श्रीगुरुजीक श्रीजमुना-
जीक दडवत करे आरसी दिखावे दही भात सुतुवा भोग धरे श्रीगुरुजी-
की थार साने श्रीजमुनाजीकी मांग सिंदूरसू वहुवेदी भरे चरणस्पर्श करे
अनसरखडीको भोग धरे.

समय होय भोग सरे पहले श्रीजमुनाजीक आचमन मुखवस्त्र वीड दोड
धरे श्रीगुरुजी कीडी आरोगे चुके श्रीजमुनाजीक आरसी दिखाउके भूं-
गार छवमें कडो करके शय्या मंदिरमें चौखण पे धरे साडी चेली
माला वीड आरसी वरनी सीसी पंखा झारी करवडी प्रसारीमें निरसे
नित्यकी वरनी अरगजाकी सिंहासन पे जल भरे शयनमें धोवादार भ-
रता आरोगे साइकू निज मंदिरमें विराजे शयन समय चौकमें अरगी
पिछवाइ सिंहासन

२५/१/२०२०

॥ ज्येष्ठ सुद १५ ॥

पुनमकूं स्नानयात्रा होइ तो चौखणकूं सवेरकूं जल लोके साइकूं अधि-
वासन होय एकमकूं स्नानयात्रा होइ तो पुरनमासीकूं अधिवासन होइ
पलना मंदिरमें शयनभोग आये पीछे सुकी हरदीको चौक पूरे हांडा फडा
धरे हांडामें कडछा रहै घडामें चमचा रहै कंकू हांडा घडाके चारों
ओर लपेटे छना माड जल पधरावे. एक लोया श्रीजमुनाजलको एक
लोवा गुलाबजलको पधरावे छना सरकाइके तुलसी पधरावे पुष्पन-
की कली पधरावे वमेलीकी रायवेलीकी मोगराकी पीतकी जुहीकी मोति-
यादी पिसी केरार पधरावे तांतेछ अधिवासन होइ प्राणायाम करके
सकल्प ॐ विष्णुरि इ त्यादि उत्तरायणे श्रीब्रह्म इतौ चतुर्दश्यां शुभकारे
शुभनक्षत्रे शुभयोगे शुभकरणे एवं गुणविशेषणविशिष्टाया शुभतिथौ

Sansthan

Shrimad Gokulnathji Maharaj

Mota Mandir

भगवतः श्रीगुरुभोजनमस्य ज्येष्ठाभिषेकं कर्तुं तद्विदुःत्वेन जलाधिवासन-
महं करिष्ये: कंकू अक्षत गङ्गीकी कवरी भोग धरें तुलसी समर्पे
शंखोदक धूप दीप चार वातीकी आरती दूसरे आवें भोग सरें

स्नान थाती वृं आवें शिरमें सतुवावे लडुकाके बडे भोग आवेंगे
सुजनी पंखा चौरुनो बंटा पलटें निजमंदिरके द्वारसं पाट लगमा रहे
पाटके आगे सूकी हरदीको अष्टदल मांडके परात पधरावे स्नानके
पडापे कंकूका अष्टदल मांडके श्वेत चौरुनो वरुन केसरकी कोरको
चोप उता विछावे हाडा घडा शिष्या मंदिरकी ओर धरें भोग सरें
आचमन मुरव वरुन वीज २ धरें दरसन खुलें मंगला आरती होख टे-
रा खेंचें तिलक लड ओटनी पाग वा टोपी वडे करके स्नानके
वरुन पे पधरावे टेरा खोलें दंडवत करें झालर घंटा शंखनाद
होय कीर्तन होय तिलक करे अक्षत चोटें चरणारविंदमें तुलसी
समर्पे शंखमें समर्पे प्राणायाम करके संकल्प करे।

ॐ विष्णु ३ रित्यादि उत्तरायणे ग्रीष्म ऋतौ ज्येष्ठमासे शुक्र-
पक्षे ज्येष्ठा शुभनक्षत्रे शुभयोगे शुभकरणे एवं गुण विशेषेण वि-
शिष्टायां शुभतिथौ भगवतः श्रीगुरुभोजनमस्य ज्येष्ठाभिषेक स्नान-
महं करिष्ये:

यह पठ जल अक्षत हातमें ते खोडने फिर शंखसं स्नान करावें
झालर घंटा शंखनाद कीर्तन बंद होइ ज्येष्ठाभिषेक वेदको पाठ हो-
इ स्नान होइ चुकें टेरा खेंचें अंगवरुन होइ वरुन केसरकी को-
र वारे बीचमें केसरकी वूटीके कुलह जोडी आभरण अक्षत तृती-
या वत् तीन चंद्रिकाको जोड डाल तिवारीमें छोटें टाकुरजीके
श्री शालिग्रामजीके तिलक अक्षत तुलसी समर्पके ज्येष्ठाभिषेक
होइ झालर घंटा शंखनाद नहीं श्री महा प्रभुजी के स्नान होइ जल-
मेंसुं तुलसी निकास लेनी तापीछें स्नान अंगवरुन सोधो समर्पे
ओटनी ओटें पलनाको भोग उत्सववत्

गोपीवल्लभमें आवें माटिया मींगे शूकर छठीवल दर पकौडीकी

कदी उत्सवको संधाना. राज भोगमें छठीयल दार पकोसीकी कमी
 मीये शाक पापड घोरयो सतुवा दही भात मीये शाक कडीके शाक
 अनंतरवहीने हांडी मलडा दूधके गोपाल वल्लभके वृदीके लडुवा
 उत्सवको संधाना उत्सवको भोग राजभोगमें आवे कीमते लडुवा
 त्रिरोजीके लडुवा मिश्रीके पना सांडके पना आंवके दोकरा अंकुरी
 को दोकरा तापर खोपराकी जड़ेकी चालनी सब ताहके गौर दूजी तर
 मेवा कदली फलदिक मिरच वुरा दूध घरती इक हरी आवे सब भो-
 ग आव चुके तुलसी शंखेदक धूप हीने. राज भोग सरें वंरामें ४ वीज
 नित्यके २ उत्सवके २ जुमले ४ चौपड मोतीकी
 परातमें होरमें जल स्नानको बचे सो कर देने सेवरक वरनी नहीं
 अभ्यंग नहीं गोपीवल्लभ भोग आवें तवसुं पंखा खिंचे नहीं. राजभो-
 गके समे खिंचे उत्थापनमें उत्सववत् खेके मूंग आरोगें आंवकी
 क्रस्तु में आंवको सीरा आंवकी वरपी पलनामें १५ दिन तथा महिना
 एक ताई आरोगें.

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

॥ अषाढ वरी ३० ॥

श्री गिरि धारीजी महाराजको उत्सव - गुलाबी वस्त्र गोह पागलू-
 मकी कलंगी हीराके ताइतकी जोडी हमेल कर्णफूल हीराके २ हतफू-
 ल होइ

अरोगवेको क्रम श्री विठ्ठल रायजीके उत्सववत् राजभोगमें शिखर
 भात आंवको विलसाइ आरोगें.

रथयात्राके आगले दिन तिवारीमें चंद्रवा पिछवाई लाल मरवमरके
 बंधे रथ सिंगारके सिद्ध कर रत्ने संध्या आरती पीछे पंचारा
 बंद होइ साज धौताके उत्थापनमें वृषी भोतवारके सुजनी क
 सीदाके कमलकी

Mota Mandir

॥ अषाढ सुद २ वा ३ ॥

रथयात्राके उत्सव आखे दिनमें वृदीके लडुवाको वडो बाहभो-

की सामग्री के दोड़ दोड़ नग बाल भोगकी सामग्रीके दोड़ दोड़ नग वूही
 दूरे गुंडा मण्डी सेवके लडुवा बीजके लडुवा चिरोजीके लडुवा शी-
 खरन वडी छोटे मलखमें वडाकी जलकी हांडी पेडा दूध पूरा
 वासोधी मलाई श्वेत वरपी बेसरी वरपी मीठे दही छेक्यो दही उ-
 सवके सधाना कदली फला दिक लोन मिरन बुरा चालनी सव तर-
 हकी आंवके टोकरा अकुरीके टोकरा खोपरीकी जलकी रथमें लडक-
 हीके तकिया।

भोग आय चुके धूप दीप तुलसी शंखोदक धूप दीप होय समय होय
 भोग सरे आचमन मुख वस्त्र वीड २ राजभोगकी माला श्रीगुरुजी-
 की वडी करके रथमें धरे श्रीगुरुजीके दोड़ माला पहरोवे क-
 मल धरे छोटे श्रीगुरुजीके माला पहरोवे दरसन खुले गुसाई
 मुखिया भीतरिया मुठा पंखा करें रथके एक विरिया डोल तिवारीके
 द्वार तांडी चलावे पीछे फिरावे किवाड फिरावे मंदिर वस्त्र होय
 भोग आवे बाल भोगकी सामग्रीके बीजके चिरोजीके पहले भोग दूसरो
 भोग चौकमें आवे छेले भोग डोल तिवारीमें आवे नग चार चार आ-
 वे और भोग पहले भोगवत् आवे आवे अकुरी दूजे झारो मरी।

भोग आय चुके धूप दीप तुलसी शंखोदक होइ किवाड फिरें समय
 होय भोग सरे आचमन मुख वस्त्र ४ वीड धरे माला पहरोवे पूर्ववत्
 दर्शन खुले मुठा पंखा होय एक विरिया चौकमें रथ डोल तिवा-
 रीके द्वार तांडी ले जाय पीछे फिरावे दूसरी विरिया रथ चलावे
 सो डोल तिवारीमें दक्षणमुख विराजे टेरा खेचें मंदिर वस्त्र होइ
 भोग आवे दूधकी हांडी पना मिश्रीको पना खांडको मलाई वासोधी
 पेडा दूध पूरा वरारी वरपी मीठे दही छेक्यो दही।

बीजके लडुवाको टोकरा चिरोजीके लडुवाको टोकरा वूहीके टो-
 करे गुंडाके मण्डीके सेवके लडुवाके आंवके अकुरीके कदली
 फला दिक उसवके सधाना चालनी सव तरहकी लोन मिरन बुरा
 शिखरन वडी वडाकी खडकी चपटीया एक चपटीया जलकी एक झा-
 री श्रीजमुना जलकी।

भोग आय चुके तुलसी शंखोदक चमचा कयेरी धरे धूप दीप होइ

टेरा खेंचें किवाड फेरें चौकमें कीर्तनियां कीर्तन गावें.
 समय होय भोग सरें आचमन मुखवरन बीजकी सिक्कीली धरें माला
 पहरावे फूल धरें दर्शन खुले बीज २ अरोगावे रथकू अगाडी ले
 पीछे ले पंजा मूंग होय आरती थारीकी सोनेके दीवली होइ
 पटका जोडवार होइ राई खेत परी क्रमा दे रथसुध्यां श्रीगुरु
 रजीकं चौकमें पधरावें चौकमें सं श्रीगुरुजीकं निज मंदिरमें पाट
 पै पधरावे जोड वडो करे गादीको शृंगार सोदनाको शृंगार वडो
 करे वागा वडो करे श्रीकंठमें चौकी ताइत हांस त्रिकल कुंडल वे
 सब रहै कुल हको शृंगार सब रहै. तीन चंद्रिकाको जोड धरें
 श्रीकंठमें एक माला खेये जोडीकी. एक माला श्रीगोवर्धन सावनी
 गादी पै वडे वडे हरे लाल कटला माला जैसे उत्सवके धरें हीरा
 की दुगदुगीकी माला पै गुंजा वेणु हीराकी धरें शृंगारमध्य तांई
 विना झालरकी ओढनी ओढें सिंहांसनपै पधरावें पैज लगावें पाट
 चौकी गेद चौगान अनो सरकी सब झारी माला सब स्वरूपनकी व
 डी करे अनोसर करे तथा उत्थापनमें चालनी खेके मूंग आरोगे
 रथ यात्रासुं ओसरसुं खेके मूंग दार आरोगे.
 संध्या आरती पीछे श्रीकंठमें चौकी कुलह पर ताइत हरयो शयन
 भोगमें खुले रथमें विराजे दूसरे दिन शृंगारको निराम नहो.

॥ आषाढ सुद ६ ॥

शयन में रथ आरति के
 पहिले पवार प्राणें और रथ करे पधरे
 पधरावे

षष्ठ पिंडरु वरुन कसूमल छज्जेदोर पाग सादा चंद्रिका जोडी मो
 तीकी उत्सवकी शृंगार अक्षय तृतीयावत् कर्णफूल ४ हतसांकल
 हत फूल मुद्रिका मोतीके शृंगार मध्यसुं कछु क आधिकी गोपीवल्ल
 भमें भात छठीवल दार पकोजीकी वडे मीने शाक पापड राजभो
 गमें हांडी महडा गो पलवल्ल भमें सनो हरेवे लडुवा वंडाकी छछो
 उवरा.

Mota Mandir

श्री गोविंदजी महाराज गादि विराजे ता दिनसुं किनारीके वरुन
 गोपीवल्ल भमें राजभोगमें श्रीविठ्ठल रायजीके उत्सववत् आरोगे.

श्रीपरमेश्वर लख आड कर धरे.
 श्रीगुरु मध्यके
 श्रीगुरु शृंगार मध्यके
 श्रीगुरु शृंगार मध्यके
 श्रीगुरु शृंगार मध्यके

उद्ये पाटिया राजभोगमें तीन कूडा छडीयल दार कडाकी छाछकी चप-
टीया गोपाल वल्लभमें धार देई एक जले बीकी एक मनो हरके लडुगकी
आमे दिनमें बंदी जलेवी आरोगे

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 3

www.vallabhacharyaagrahara.org

www.vallabhacharya.org

Pushkumargiya Research Portal

सांझक भोग समय होल तिवारीमे बनातके लाल बगलाम विराज
केला पल्लव धरे सध्या भोगमें सध्या भोग आवे अथकीको भोग आवे द-
तेके मेरके लडुवा मेरकी भा आकको विरसाक डोंकी दार तथा मूंग
एक पीको चादनी सव तरहकी अंगरस कही फलादिक डोन मिरच
बुरा तुलसी शंखोदक धूप हीप होई समय होई भोग सर आरती
होई सवमे लाल शगकी माला तथा जोड पहरे
रथयात्रा पीछे हिंडोरा पहरे सुन हरी किनारीके कुरा धरे श्वेत
कुराके लाल कोर श्वेत कुराके हरी कोर मणीनके आभरण पहरे
मोतीके पहरे

॥ आषाढ सुद १० ॥

वेगन दसमी आज संसखी अनसखीमें वेगन सव प्रकार आरोगे
एकादशीस वेगन बंद होई

Shri Taji Maharaj Ki Pustak

॥ आषाढ सुद १५ ॥

अषाढी पुनमके इक दाली श्वेत चंदरीके वरस पुनमके छटक ओ-
ढनीके झालर नहीं लगे पुनमके मोतीको मुकुट जोडी मोतीको
शंगार भारी चोये धरे ओढनी राज भोगमें रही आवे
गोपीवल्लभमें भात छडीयल दार पकोडीकी कयी पापड मेरकी पूरी
के टिकाने कचौरी छेक्यो दही आरोगे मीये शाक
राज भोगमें हांडी मलडा गोपाल वल्लभमें लालके लडुवा आरोगे मीये
शाक वडाकी छाछके उवरा सांझके चूडकी गोह पाग बांधे
सीस फूल बीचमें

Sansthan

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ श्रीकृष्ण वद ६ ॥

Mota Mandir

एकमके खाली दिन होई तो श्वेत धाये कुरा सुनहरी चित्रके फेंव
लडकी जोडी आजसु मालाको आधो जोड धरे सो दशाहरा ताई

एकमकूँ वा दूजकूँ हिंडोरा हीराकी गादी पै विराजे अभंग होय
वस्त्र लाल सुनहरी किनारीके जोड़ी हीराकी श्रीमस्तकपै हरी खिडकीपै
पाग सादा चंद्रिका पोंदना बडे कर्णफूल ४ शृंगार दुहरो दूसरे उत्सव
वत् हारलै कमल पत्र नही गोपीवल्लभमे छजयल हार पकालीकी कू
दी मौख शाक पापड.

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 3
www.vallabhacharya-agrahara.org

राज भोगमें आधे घण्टीमा गोपां चतुर्मुखी वृद्धा श्रीम-
हा प्रभुजी दोई दिन ताई गुंजा पहरे आ भरणमें पहंग पोप पिछ-
वाई कसूमल चौपडवेग जडोऊ गेद चौगान सोनेके आरसी बडी दे-
खे मीगे शाक क्येसनमें सांझुकूँ हिंडोरा धरके हिंडोराकी अधि-
वासन करे प्राणायाम करके संकल्प करे संकल्प ॐ विष्णुविष्णु-
विष्णु रित्सादि दक्षिणायने वर्षाक्रुतौ भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य हिं-
दोलादिरोहणं कर्तुं तदङ्गत्वेन हिंदोलाधिवासनं करिष्ये. कंकू
अक्षत छंटे चंदन डांडीनकूँ तथा खंभनकूँ लगावे गडी की क्येरी
भोग धरे तुलसी शंखोदक धूपदीप ४ वातीकी आरती उवरा सरे
गकुरजी छंटे गकुर हिंडोरामें विराजे सादा पहरे श्रीमहाप्रभुजी
पास विराजे साहज झुलयेके भोग धरे शंकरपुस्तक सर्वके सथान
चालनी सब तरहकी मीगे शाक दूधकी हांडी तर मेवा कदली फ-
लादिक लोन मिरच वुरा तुलसी शंखोदक धूपदीप होइ टेरा खेचें
समय होय भोग सरे आचमन मुखवस्त्र २ वीज और २ वीज अ-
धिकी धरे दरसन खुले हिंडोरा चार गावे टेरा खेचें शारी सब
करने शयनपै भरे शृंगार बडे करे सोसफूल रहे विना झारकीजो-
ठनी ओदे शयनभोग आरोगे हिंडोरामें वीठ २ संध्याभोगके धरे
एक शारी पडगी पै धरे नित्य शृंगार बडे भये पीछे सोसफूल
नित्य रहे.

www.vallabhacharya-agrahara.org
Pushpitmargiya Research Portal

ShriTajMahalKiPustak

Sansthan

Shrinad Gokulnathi Maharaj

Mota Mandir

दूसरे दिना पीरे वस्त्र लाल उत्सवकी जोड़ी उत्सवके हार सादा
कर्णफूल चार कलौके जुहाके चंद्रहार केजनी खिडकीपै पाग सादा
चंद्रिका श्रीमहा प्रभुजी गुंजा आभरण पहरे श्रीमहा प्रभुजीके पह-
ग पोत्रा होऊ दिना तीसरे दिना वेंजनी वस्त्र हीराकी जोड़ी शृंगार
इकहरो वेंजनी कुलह आभरण हीराकी करधनी जोड कामका

शृंगार भारी चोये धरे चोये शृंगारकुं हरे वस्त्र लाल विडकीकी
 पाग सुनहराकी जोडी कर्णफूल ४ शृंगार भारी फोहरा बडे धरे
 ॥ श्रावण वद १८ ॥

www.vallabhacharya-agrahar.org
 www.vallabhacharya.org
 सादा जोड वस्त्र करारी वा कसमूल जोडी लाल पागकी शृंगार
 भारी
 (Pushfimargiya Research Portal)

॥ श्रावण वद १९ ॥

कुं श्रीगोवर्धनजी महाराजको उत्सव गुले नार किनारीके वलीके
 वस्त्र जूकेको मुकुट हीराकी जोडी शृंगार भारी दुहरो वा इकहरो
 अरोगवेके क्रम श्रीविठ्ठलरायजीके उत्सववत् सांझ कुं गोल पाग

॥ श्रावण वद २० ॥

मावसकुं हांडी काचकी सांझकुं बंधे काचकी हिंडोरा वस्त्र श्याम
 किनारीके लहरीयाके वा धारीके हीराकी जोडी हीराको मुकुट
 शृंगार भारी चोये धरे शृंगार वपकेका इकहरो सांझकुं
 हिंडोरा झूलके शृंगार बडे नहीं होय शयन भोग आरोगे छडि
 बलदार भोग सरें हिंडोरामें फेर विराजे आचमन सुखवस्त्र शयन
 के बीडा हिंडोराके बीडा करनी अरगजाकी धरे सब स्वरूप माला
 पहरे झारी सब स्वरूपनकी भरे भोग आके दहीके सेवके लडुका
 उत्सवको सधाना दूधकी हांडी तर मेवा केला फलादिक होन मिख
 बुरा मैदाकी पूरी आकेको विलसाख कचौरी खेक्यो दही गुंडिया
 दारकी खेकी दार वा मूंग फड फडीया चणाकी दार आज शयनमें
 हिंडोरा झुलें तुलसी सांखोदक धूप दीप टेरा खेचें समय होय भोग
 सरें आचमन सुखवस्त्र बीडा होय धरे दरसन खुलें हिंडोरा झुलें
 आरती थारीको होय नोछावर होय टेरा खेचें शृंगार बडे होय
 श्याम गोल पाग बंधे सीसफूल रहे मालाको जोड पहरे शयन
 आरती होय वा न होय जोड बडे होइ श्रीगुरुजी पौडे झारी वंग
 माला बीडा नित्यवत् नित्य फिरते शृंगार सब तरहके होय पागके

शृंगार रंगकी खिडकीकी जरीकी खिडकीकी

आज के ही दिन पाउये
चोटी धरे ॥ श्रावण सुद ३ ॥

श्री गुरुजी तीज कसना आवा पहंग पोष उत्सवके श्री गुरुजी
के श्री महा प्रभुजीके श्री महा अभुजी आभरण पहंग अभंग
नहीं श्री गुरुजीके अभंग होंय वरुन चौपुली चंदरीके छज्जेदार
पाग हीराकी जोडी कर्णफूल ४ शृंगार उत्सववत भारी दोहरो हो-
इ चंद्रिका सादा पिछवाई चंद्रजीकी तीजक कसना आवा पहंग प-
लंग पोष उत्सवके रायन समय हिंडोरामें सुले शृंगार रहनेको क्रम
राखीक लिरवो है सांझके अनेसरमें मिगईकी थार बीडा ४
गोपी वल्लभमें छडियलदार पकोडीकी कढी मीये शाक पापड.
राज भोगमें आधो पाटिया मीये शाक हांजी मलज दूधके गो-
पाल वल्लभमें चिरोजीके लडुवा.

॥ श्रावण सुद ५ ॥

नाग पंचमीके कोयलके रंगके वरुन सुन हराकी जोडी सुनहरो
जरीकी खिडकीकी पाग सादा चंद्रिका मध्यके फादना ४ कर्णफूल
सोनेको नाग धरे
गोपी वल्लभमें भात छडियलदार पकोडीकी कढी पापड मीये शाक.
राज भोगमें आधो पाटिया मीये शाक चोरी थके फरा मुटिया वुराकी
कयेरी घृतकी कयेरी पापड.
गोपाल वल्लभमें सेवके लडुवा आरोगे सेवकी खीर आरोगे चोख-
की खीर नहीं.

॥ श्रावण सुद ८ वा १ ॥

जा दिन श्रेष्ठ चंद्रमा श्री गुरुजीके होय ता दिन वगौचामें श्री-
गुरुजी हिंडोरा सुले वरुन लाल हपहरो किनारोके लहरीबाके
जोडी हीराकी मुकुट हीराके आभार भारी इकहरो आभरण उत्स-
वके नित्यके मिलमा छडियलदार पकोडीकी कढी आधो पाटिया
गोपाल वल्लभमें मनोहरके लडुवा पापड.

साक्षुं ग्वाल भये पीछे उकरा धरके हिंडोराको अधिवासन करें।
 पूर्ववत् उकरा सरें झालर चय शंखनाद होइ जलकी झारी संग
 चले श्रीमहाप्रभुजी छोटें टाकरजी हिंडोरामें विराजे श्रीमहाप्रभुजी
 पास विराजे माला सब स्वरूप पहरे भोग आवे चंद्रकला माखन
 वडा हांडी दूधकी मलाई पडा वासी हो दूध पूरी करारी या करकी
 मीये दही छोकी दही शिखरन वडा कोडवरा खोरकी उकरा व-
 डाकी छछकी उकरा उभयको सधाना करही फलदा लैन मि-
 रच वूरा चालनी सब तरहकी कचौरी सेव गुंझिया दारकी छोकी
 दार फड फडीया चना तथा दार

तुलसी शंखोदक धूप दीप समय होइ भोग सरें आचमन मुख-
 वस्त्र बीडा २५ धरें दरसन खुलें हिंडोरा झुलें आरती थारीकी
 होय नोछावर उपरना रूपैया^(१) होय पधारके मंदिरमें हिंडोरा
 झुलें भागली माला बडी होइ दूसरी माला पहरे दरसन खुलें
 हिंडोरा झुलें राई लैन होय बिबाड फिरें झारी भरे शृंगार
 बडो करें गोल पग बांधें सिसपूक रहै सवन भोग आरोगे छ-
 डीबल दार शयनमें होय।

॥ श्रावण सुद ११ ॥

पवित्रा एकादशीक अभ्यंग होइ वस्त्र कुलह अक्षय तृतीया जैसे
 जोडी लाल नित्यकी तीन चंद्रिकाको सादा जोड पैदना बडे धरें
 भादीये शृंगार मध्य ताई उत्सवको बडु भी हार धरें कडी आरती
 देखें।

गोपी बल्लभमें आखो पाटिया मीये शाक उत्सवको सधाना
 राजभोगमें तीन कुडा छडि थल दार मीये शाक पाण्ड कचरीयाकी
 थारी तिलवडी देवरी बडीके २ साक।

गोपाल बल्लभमें मना हरके लडुवा उत्सवको सधाना खोर दूनी
 वडाकी खखकी चपटिया फलारकी सब आवे।

पवित्रा अवेरकुं धरें तो पलना झुलें सिंहासन पै विराजे सिंहा-

सनको साज सब मंडे षट-चोकी नहीं सांझके पहरे तो उत्थापन भोग सरे पवित्रा राखी को आधिवासन भेले होइ प्राणायाम करके संकल ॐ विष्णु ३ रिखादि दाक्षिणायने वर्षा त्रयुतो श्रावणमासे शुक्रपक्षे एकादश्या शुभनक्षत्र शुभयोग शुभकरण एव गुणविशेषण विशिष्टाया भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य पवित्रा रोहण रक्षित्धनं कर्तुं तदङ्गत्वेन उन्नयराशिवासनं करिष्ये तस्य अक्षय्या गङ्गी भोग धरे तुलसी शंखोदक धूप दीप आरती करसन खुले की तैनियां आवे दंडवत करके झालर घंटा शंखनाद कर पवित्रा पहरे तुलसी चरणारविन्दमें समर्पे छोटें शुकुरजीकुं श्रीमहादेवा मजीकुं श्रीमहा प्रभुजीकुं पवित्रा पहराके रूपैया नारियल भेंट धरे दश खेचें भोग आवे शकरपारा उत्सवको संधाना मिश्रीकी डेली दूधकी हांडी चालनी सबतरहकी सेवेरकुं पवित्रा पहरे तो झारी १ भरके श्रीशुकुरजीके पास धरके आधिवासन करे सांझके पवित्रा पहरे तो दरसन होइ चुके झारी भरके भोग धरे संध्या भोग उत्सवभोग भेले आवे तुलसी शंखोदक धूप दीप भोग सरे वीज अथकी आवे सेवेरकुं भोग न्यारे आवे उत्सवको भोग सरे राजभोग आवे पिछवाई सुनहरी वसमाकी

॥ श्रावण सुद १२ ॥

झादरीकुं जागते श्रीमहा प्रभुजी पवित्रा पहरे ओढनी ओढे गुलबी वस्त्र पंजाकी जोड़ी पंजाको एक नगो मुकुट फांदना बडे धरे गारी पे शृंगार मध्य तांई पिछवाई त्रिभुकी शृंगार करचुके सुनहरी रुपहरी श्वेत फूल माला पहरावे ओढनी उद्येक ओढनी पे छोटी फूल माला गुजराती पावेत्रा कडी फूलमाला लट पवित्रा फूलका माला पहरावे आरसी दिरवावे ओढनी ऊपर के पावेत्रा माला बडे कर लड्ड गोपीबहू भ आवागे छडियल दार प्रकोडी की कडी पल्ला बूले साजभोगमें सेवके लड्डुकाको गोपाल वरुभ आरोगे राजभोग सरे आचमन मुखवस्त्र वीज आरोगे सिंहासन पर पधारे ओढनी ऊपरके पवित्रा पहरावे माला फूल

को पहरावे दरसन खुले आरसी दिखवे गेंद नोगान केन पाट नैकी
 लगावे त्रिधौ आरती होय आरसी देखे माला बजे करे लटपवित्रा
 बजे करके गाम ओर ताकिया पै धरे दूसरे पवित्रा रहे आवे उथा
 पुन भोग सरे फूलको माला पहरे लटपवित्रा पहरे संस्था आरती
 पीछे माला लटपवित्रा ओढनीके ऊपरके पवित्रा कडे करे गाल
 आरोगे उबरा सरे हिजोराम विराजे ओढनी ऊपरके पवित्रा लट
 पवित्रा फूलको माला पहरे हिजोरा बुद्ध बुद्धे शृंगार बजे होइ
 गोल पाग बाधे सोसफूल रहे या प्रको तरासी तांडे पवित्रा पहरे
 एकादशीकं तथा द्वादशीकं दोऊ दिन गुसाई बहुवेयी मुखिया भी
 तरिया पवित्रा धरावे एकादशी द्वादशीकं गुसाई बालक तथा
 बहुवेयी पवित्रा न पहराइ सके तो तेरस तथा चौदस तथा पून
 मकं धरावे पवित्रा एकादशीसुं राखी तांडे सिंहासनपै हिजोरकी
 झालर पै पवित्रा रहे पवित्रा एकादशीसुं भादो वद १२ तांडे
 श्याम वरन नही धरे तेरसकं चतुरा नागा वरन लहरियाके शृंगार
 यथा रुचि राजभोगमें गोपाठ वल्लु भकी थार सीराकी कंकोडाआ
 रोगे

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

॥ श्रावण सुद १६ ॥

कुं रायजीको उत्सव पीरे वरन कुलह धरे कडे फोदना शृंगार
 गादीपै मध्य तांडे कामको जोड अरोगवेको अम श्री विठ्ठल रायजीके
 उत्सववत्ता गादी ताकियाकी पाट नैकीकी लकी गादीकी धेत खोली
 उतरे गादी वरन बजे होइ पिछवाई चंदुवा टट बंदीके गेंद नोगान
 सोनाके वेन जडाऊ शतरज सोनाकी पट पीरो

॥ श्रावण सुद १५ ॥

रक्षाबंधन - तथा श्री दामोदर जीके उत्सव अख्यग होय गुलेनार
 वरन छड्जेदार पाग चद्रिका साहा हीराकी जोडी शृंगार गादी पै
 दोहरो उत्सववत् सुनहरी रूपहरी पवित्रा पहरे जितनी जग
 राखनी कर्णफूल ४ साज ताकिया टट बंदीके गेंद नोगान सोनेके
 वेन चौपड जडाऊ पलंगपोष कसना झावा उत्सवके सुजनीप्र-

विनिष्क उत्सवकी सवेरकूं वा सांझकूं राखी बांधवेको समय पवित्रा
 वन् अवेरो मुहूर्त होय तो हिंडोरामें राखी बांधे पास मिगईके टुक
 छंनसुं बांधके धरे दरसन खुले दंडवत करे आखर घंघ राखे
 तार होय तिलमण्डि अक्षत चोदें राखी दोऊ श्रीवज्रमें बांधे
 बीज २ धरे नरणारविंदमें तुलसी समर्पे छोदें श्रीवाकरजीकूं
 श्रीशालिग्रामजीकूं श्रीमहाप्रभुजीकूं तिलक अक्षत राखी
 हिंडोरा कावको तीजकूं राखीकूं शृंगार वडे भये पीछे पागपै
 छोरि सिरपच छवि कलगी हीराको लड वसर करण फूल २ हत
 फूल २ शोरा श्रीकंठमे लड त्रिवल दुगदुगीको माला धरे शयन
 भोग अरोगके हिंडोरा खुले हिंडोरामें शयन आरती होइ अनो
 सरमें मिगईकी थार ४ बीज ३ कूं तथा राखीकूं दोऊ दिन
 सप्तमी तांडे

श्रीजन्माष्टमी महोत्सवके शृंगार भादों वद ५ सुं होइ

॥ भाद्रपद वद ५ ॥

कूं एक वंद पीरी चूदडी के वरन छज्जेदार पाग हरी जोडी रणी
 फूल २ दोऊ श्रीहरस्तनमें एक एक फूल वेषु हरी लूमकी कलगी
 सुनहरी शृंगार हलको शृंगारी आप गोपाल वल्लभमें मनोहरके
 लडुवा पिछवाई सिंहासन चंदुवा तकिया पाट चौकी सब यटवंदीके

॥ भाद्रपद वद ६ ॥

कूं हरे श्वेत लहरीयाके वरन छज्जेदार पाग लाल जोडी कर्णफूल
 २ श्रीमस्तकके श्रीहरस्तनमें एक एक फूल गारोपै लालमाल २
 अक्षती पंचमीसुं वेषु लाल जमावकी कलगी लाल शृंगार पंच
 मीसुं कछुव भारी फोदना नहीं शृंगारी आप गोपालवल्लभमें
 मेवाये आरोगे नगार खाना पवित्रा एकादशीसुं

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ भाद्रपद वद ७ ॥

कूं कसूमल जेरिकाके वरन छज्जेदार पाग हीराकी जोडी फोदना
 मध्यके धरे श्रीकंठमे कंवी दुगदुगी वही धरे फोदनाकी गारोकी

माछा मोतीनकी गादी पै हार हीराके चंद्रहार सोनेको गुंजा वेणु
 श्वेत मीनाकी एक श्रीहस्तमें रत्न चौक हीराको धरे हव सांकला
 मुद्रिका नहीं शृंगार मध्य ताई सादा चंद्रिका धरे शृंगारी आप
 गोपाल बहु भमें केशरीया चेवर आरोगें शयन भोगमें छरीको
 भोग आवे सारा मुरब्बाको केशरी मेराको पूरा खेना सोरकी क
 टोरी लोनकी बचरी अथकीमें साकर भुजन

सप्तमीसुं दसमी ताई जडाउत विधा गुंजा आवे खोरा श्रीश्री
 प्राचीन गादी हीराकी चौपड गेह वौगान सोनाके पदंग पोरा कस
 ना झावा सुजनी उत्सवके श्रीमहा प्रभुजी सुधरा सोनेको वासन
 वंदन वार टेरा उत्सवके सप्तमीकुं करवा करवडी मृतकाके तथा
 अरगजाकी वरनी आवे खोरा हीराको सीसी गुलावजलकी कुचाव
 टा जडाऊ

श्रावण सुद १२ पवित्रासुं भारों वद ११ ताई हरे श्याम वरुन नहीं
 धरे उत्थापनमें सिक्खे नाथ नहीं आरोगे अष्टमीके दिनसुं सांकड
 उतरे शयनको करवा करवडी अरगजाकी वरनी न होय श्रावण
 सुद १४ के दिनसुं तक्रियांनकी लंबी गादी पाट चौकीकी श्वेत खोली
 उतर जाय गादी वरुन नहीं पंचमीकुं पडवाके तक्रिया पाट चौकी
 टाट बंदीके कामके दूज तथा तीज तथा चौथकुं तक्रिया लंबी
 गादी पाट चौकी नित्यके श्वेत खोली नहीं रहे पंचमी तथा छटकुं
 टाट बंदीके सप्तमीकुं अष्टमीकुं नौमीकुं दसमीकुं जडाउतक्रिया
 एका दशीकुं तक्रिया लंबी गादी पाट चौकीकी श्वेत खोली जन्मा
 ष्टमीके वंदाकी चढे गादी प्राचीन गादी वरुन न विछे श्रावणसुद
 १४ के दिनसुं टाट बंदीके चहुवा बंधे उत्सवके टेरा पंखा वंदन
 वार वामनद्वारशी ताई रहे तथा श्रावण सुद १४ के दिन नये सिं
 धासन पिछवाई बंधे शुभम् ॥

Sansthan

Shrimad Gokulnathji Maharaj

Mota Mandir

॥ ग्रहणसमयको संकल्प ॥

ॐ विष्णु विष्णोरित्वादि यथानाम्नि संवत्सरं यथायने यथा-
 क्रमो अनुक्रमसं अनुक्रमेण अनुक्रमितो अनुक्रमशक्तो अनुक्रम-
 यो अनुक्रमवत्तु गुणवैरोक्ष्ययोगोपानुक्रमितो श्रीनन्द-
 रायजीवमारास्याभ्युदयार्थं यथा रात्रि इदं सुवर्णं वा रौप्यं यस्मै
 कस्मै ब्राम्हणाय दातुमत्सजे

(Pushumargiya Research Portal)

ग्रहणके दिन बडे बालभोग मगदको होइ गोपाल कलुभमे आ-
 रोगे अक्षयतृतीया पीछे सुतुवाको बडे बालभोग गोपाल कलु-
 भमे आरोगे ग्रस्तास्त होय ता दिन सरखडी नहीं अरोगे अनस-
 खडीमे भातके टिकाने सीरा घृतके टिकाने कुरा रोयेके टिकाने
 पुरी लीये भुज मा लोन नहीं और दूधघर बालभोग सब आरोगे

चंद्रोदय भवे पाछे जल आवे तव रसोइ होइ शयनभोग
 राजभोग गोपी कलुभ भेले आरोगे लोन सघानाको क्येरी

इति शिवराजिदुधमाराजपुरीपुस्तक
 डी सरखडी सब होइ लीये रोये ग्रहणसमय शृंगार मंगलको
 सो रहै उष्णकालके दिनमें पिछली रात्रिको ग्रहण होय तो
 मंगलभोग मोक्ष भये पीछे स्नान होइ श्रीयकुरजीकुं तिलक
 लड धरावे दोषी वा पाग ओढनी उढावे आरी भरे सब स्वस्ति
 नकी छोट श्रीयकुरजीकुं श्रीशालिशामजीकुं श्रीमहाप्रभुजीकुं
 स्नान होइ दूधघरकी सामग्री भोग धरे मंगल भोग धरे भो-
 ग सरे आरती होइ शृंगार होइ शृंगार भोग गोपी कलुभ आ-
 रोगे नित्यवत् सब भोगको क्रम नित्यवत् शीतकालमें पिछली
 रात्रिको ग्रहण होय तो मंगलभोग पहले अरोगे होइ

ग्रहणके दिन ४ घडी पहले सरखडी भोग आरोगे
 सूर्यग्रहण ग्रस्तास्त होइ तो शयन भोगमें सीरा पूडी आरोगे
 दूसरे दिन गोपी कलुभ शयन भोग भेले आरोगे

अक्षय तृतीया पीछे जन्माष्टमी पहले ग्रहण ग्रस्तास्त होव तो दार भोजी उत्थापनमें आरोग्येकी श्रीजमुनाजलमें भिजोष रासनी चंदोदय होइ तप दार निवासके भोग धरनी श्रीजमुनाजलकुं तुरसी क्षयरेमें पधराव देनो

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 3

www.vallabhacharya-agrahar.org

॥ अथ कीर्तनविधि लिख्यते ॥ भादों वद - श्रीजन्माष्टमी ॥
www.vallabhacharyakrupa.org

श्रीमहाप्रभुजी आगे पीछे वधाई गावनी

(Pushchimargiya Research Portal)

राग देवगंधार

आज वन कोऊ हो जि न जाय नेन भर देखो नंदकुमार आज अति बढ़यो है अनुराग

पंचामृत समे
धनाश्री

रानीजू आपुन मिलि मंगल गावे (शृंगार होती समय) अभंग आपुन मिलि मंगल गावो माई जावो हो सुतनीसेजसो हा रानी तेरो रानी विरजीयो गोपाल फुली फुलीरीजसोहा सुवन फूलन फुली प्रभु भयो महारो प्रव जव यह बाव सुनी नंदनंदन वृंदावनचंद आज नंदजूके द्वारे भीर

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

(तिलकसमै) आज वधाईरो दिन नीरो

(राजभोग आये पीछे) वधाई माई आज वधाई नंद वधाई होजे ग्वालन नंद वधाई वांरत गढे तुम जो मनावत सोई दिन आयो

(राजभोग दरसन होती समय) एरी ए आज नंद रायके आनंद भयो सवे ग्वाल नाचें गोपी गावें आज महा मंगल महारो (भोग संध्या आरतीमें) आज वरदोय गोकुलमें अद्भुत वषा आई

Sarathi

हो पद्म धरनो कनक लप निवारन वदे धरन गिरिवर भूप मोहन नंदे राय कुमार भादोंकी रात अंध्यारी आठे भादोंकी अंधियारी अंध्यारी भादोंकी रात गावत गोपी मुधु मूदु वानी प्यारे हरिको विमल जस गावत गोपांगना यह धन धर्म होते पायो सुनिबड

Mota Mandir